AMAR UJALA

8 September, 2019

डिग्री पाकर खिले छात्र-छात्राओं के चेहरे

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी) के पांचवें दीक्षांत समारोह में वानिकी का अध्ययन कर रहे 315 युवा पास आउट हो गए। इनमें 253 एमएससी डिग्रीधारक छात्र जबकि 62 पीएचडी धारक हैं। शनिवार को आयोजित पांचवें दीक्षांत समारोह में केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने छात्र-छात्राओं को डिग्रियां व मेडल बांटे। डिग्रियां और मेडल पाकर छात्र-छात्राओं के चेहरे खिल गए। इस मौके पर केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने पासआउट छात्र-छात्राओं से कर्तव्य निष्ठा और जनभागीदारी के साथ काम करने की अपील की। इसके अलावा लगन और कर्तव्यनिष्ठा से काम करने, कार्यों में जन की सहभागिता सुनिश्चित करने और सोशल फोरेस्ट्री को बढ़ावा देने की अपील की। उन्होंने कहा कि वर्तमान में लैंटाना (घास) का खतरा बढ़ता जा रहा है। इसके साथ चीड़ से भी खतरा हो रहा है। इसके लिए सामूहिक प्रयास की जरूरत है। महानिदेशक वन एवं विशेष सचिव वन एवं पर्यावरण मंत्रालय सिद्धांत दास ने जल संरक्षण पर जोर दिया। उन्होंने कहा जल संरक्षण से झील रिचार्ज होंगे, घास उगेगी और घास उगने से जंगल में रहने वाले शाकाहारी जीवित रहेंगे। ऐसे जीवों का कुनबा बढ़ने के साथ ही बाघ और शेरों की संख्या में भी वृद्धि होगी। इस दौरान डॉ. एचएस गिनवाल सहित सभी प्रोफेसर, छात्र एवं उनके परिजन मौजूद रहे।

315
छात्र-छात्राओं को मिली एमएससी पीएचडी की डिग्री

एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी का पांचवां दीक्षांत समारोह
केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री ने बांटीं डिग्रियां और मेडल

देहरादून की प्रिया बिष्ट को गोल्ड मेडल एवं डिग्री प्रदान करते वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर।

किस कोर्स में कितने पासआउट

- पीएचडी धारक- 62
- एमएससी फॉरेस्ट्री- 80
- एमएससी इंवायरन्मेंट मैनेजमेंट-79
- एमएससी वुड साइंस एंड टेक्नोलॉजी-71
- एमएससी सेल्युलोज एवं पेपर टेक्नोलॉजी-23

इन्हें मिला गोल्ड मेडल : निधि, ओइनडलिा बासु, सबनम, अजित शेखर, मितिनम जमोह, प्रिया बिष्ट (दो), सुब्रता पाल, विजय कुमार, गुरसिमरन कौर।

उत्तराखंड की प्रिया बिष्ट को मिले दो अवॉर्ड

उत्तराखंड की प्रिया बिष्ट को दो गोल्ड मेडल मिले हैं। एक गोल्ड मेडल वुड साइंस व टेक्नोलॉजी में प्रथम आने पर और दूसरा अवार्ड शास्ता प्लेवुड इंडस्ट्री कोलकाता की ओर से दिया गया। प्रिया बिष्ट के पिता मोहन सिंह बिष्ट ऑर्डनेंस फैक्ट्री में कार्य करते हैं। माता गृहिणी हैं।

डीम्ड यूनिवर्सिटी के पांचवें दीक्षांत समारोह में उपस्थित छात्र-छात्राएं। अमर उजाला

'एफआरआई की मरम्मत को जल्द मिलेगी राशि'

देहरादून। एफआरआई के बिल्डिंग की मरम्मत के लिए धनराशि की कोई कमी नहीं होगी। बिल्डिंग की मरम्मत का प्रस्ताव आने पर धनराशि दो हफ्ते में मंजूर हो जाएगी। बशर्ते बिल्डिंग के पुराने स्वरूप में कोई परिवर्तन न हो।

ये बातें केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने शनिवार को एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में कहीं। जावड़ेकर ने कहा कि एफआरआई सुंदर कैंपस है। इसकी सुंदरता हमेशा बनाए रखना हम सभी का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि सौ साल से अधिक पुरानी बिल्डिंग की संरचना वाकई में अद्भुत है। वर्तमान में बिल्डिंग के कुछ इमारतों में मरम्मत की आवश्यकता है। इसके लिए एफआरआई की ओर से प्रस्ताव मिला है। बिल्डिंग के मरम्मत के लिए जितनी भी धनराशि की आवश्यकता है, वह दो हफ्ते में मंजूर कर दी जाएगी। लेकिन बिल्डिंग की सुंदरता पर इसका प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए और कहीं भी ऐसा नहीं लगना चाहिए कि बिल्डिंग में पैच लगाए गए हों। साथ ही उन्होंने यहां मौजूद फरिस्ट स्मारक का भी रिनोवेशन करने को कहा। जावड़ेकर ने कहा कि केंद्र सरकार जल्द ही स्कूल नर्सरी प्रोग्राम चलाएगी। इसका उद्देश्य बचपन से ही पेड़-पौधों के प्रति जागरूकता का भाव पैदा करना है। इसके तहत पांचवीं कक्षा के छात्रों को बीज दिए जाएंगे। बीजरोपण के बाद आठवीं कक्षा तक छात्र देखभाल करेंगे। पासआउट होने पर छात्रों को ट्रॉफी के रूप में यही पौधा भेंट किया जाएगा। इसके बाद छात्र यह पौधा अपने घर या पड़ोस में लगा सकेंगे।

दीक्षांत समारोह में पहुंचे केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री ने की घोषणा

फॉरेस्टर रोज कर रहे 10 किमी वन क्षेत्र का भ्रमण

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि फारेस्टरों को एक स्मार्ट मोबाइल दिया है। जिसमें एक एप के जरिए उन्हें मंत्रालय से जोड़ा गया है। वह एप के माध्यम से यह सुनिश्चित होगा कि एक दिन में फारेस्टर ने कितने किमी फारेस्ट एरिया क वर किया। रिपोर्ट के मुताबिक फारेस्टर रोज करीब 10 किमी वन क्षेत्र में भ्रमण कर रहे हैं।

पहले जंगल थे और अब बाहर से खरीदनी पड़ रही लकड़ी

जावेड़कर ने कहा कि हमारे देश में कुछ ऐसे कानून बने हैं, जिसकी वजह से लोगों ने पेड़ लगाने ही बंद कर दिए हैं। इसके लिए उन्होंने चंदन की लकड़ी का उदाहरण दिया। कहा कि पहले हमारे यहां चंदन के जंगल होते थे, लेकिन अब हमें चंदन ऑस्ट्रेलिया से खरीदना पड़ रहा है। इसलिए सरकार अब लगाओ, उगाओ और यूज करो की नीति पर काम कर रही है।

मेडल प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं। अमर उजाला

DAINIK JAGRAN

8 September, 2019

दीक्षांत समारोह एफआरआइ (सम) विश्वविद्यालय के पांचवें दीक्षांत समारोह में छात्र-छात्राओं को मिला मेहनत का इनाम

एफआरआइ के 315 छात्रों को उपाधि, नौ को गोल्ड मेडल

वन अनुसंधान संस्थान (सम) विश्वविद्यालय से वुड साइंस एंड टेक्नोलॉजी मे एमएससी करने वाली देहरादून की छात्रा प्रिया बिष्ट को गोल्ड मेडल प्रदान करते केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर, साथ में कुलाधिपति डॉ. एससी गैरोला। उधर, विभिन्न विषयों में एमएससी में गोल्ड मेडल हासिल करने वाले छात्र-छात्राओं ने सेल्फी लेकर इस यादगार पल को कैद कर लिया। • जागरण

जागरण संवाददाता, देहरादून: वन अनुसंधान संस्थान (सम) विश्वविद्यालय के पांचवें दीक्षांत समारोह में एमएससी व पीएचडी करने वाले 315 छात्र-छात्राओं को उपाधि प्रदान की गई। वहीं, एमएससी के नौ छात्रों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए गोल्ड मेडल से नवाजा गया। इस अवसर पर केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने वन अनुसंधान के लिए समर्पित हुए पासआउट छात्रों को वन संरक्षण की चुनौतियों को स्वीकार करने का आह्वान किया।

शनिवार को एफआरआइ के मुख्य भवन में दीक्षांत समारोह का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने विभिन्न विषयों में एमएससी करने वाले 253 व पीएचडी करने वाले 62 छात्र-छात्राओं को उपाधि प्रदान की। उन्होंने वन अनुसंधान में पेशेवर जगत का हिस्सा बनने जा रहे छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन के दौर में वन संरक्षण चुनौती से कम नहीं। वन संरक्षण से जुड़ चुकी भावी पीढ़ी को वनों पर आश्रित व इनके इर्द-गिर्द रहने वाले लोगों को जोड़कर काम करना चाहिए। साथ ही उन्होंने वन संवर्धन की दिशा में किए जा रहे बेहतर कार्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बीते पांच साल में 15 हजार वर्ग किमी वनों का विस्तार हुआ है। पेरिस समझौते के अनुसार वर्ष 2030 तक 2.5 से तीन बिलियन टन कार्बन डाईऑक्साइड के समान अतिरिक्त कार्बन सिंक (वातावरण से कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित करना) क्षमता विकसित करनी है। इसके लिए स्कूली स्तर पर नर्सरी की महत्ता को बढ़ावा दिया जा रहा है। जिन स्कूलों में जगह खाली है, वहां वन विभाग पौधारोपण का काम करेंगे। दीक्षांत समारोह में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आइसीएफआरई) के महानिदेशक व कुलाधिपति डॉ. एससी गैरोला, एफआरआइ के निदेशक व कुलपति एएस रावत आदि उपस्थित रहे।

इन्हें मिला गोल्ड मेडल: निधि, ओद्रिला बसु, शबनम बंधोपाध्याय (वानिकी), अजीन शेख, मितिनम जमो (पर्यावरण प्रबंधन), प्रिया बिष्ट, सुब्रत पाल (काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी), विजया कुमार, गुरसिमरन कौर बग्गा (सेल्यूलोज एंड पेपर टेक्नोलॉजी)

HINDUSTAN

8 September. 2019

दीक्षांत समारोह

- एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में बांटीं उपाधियां
- जावड़ेकर बोले, चीड़ और लैंटाना उत्तराखंड के जंगलों के लिए खतरा

62 पीएचडी में और मास्टर्स में 253 पास आउट, नौ को गोल्ड मेडल मिला

एफआरआई विवि में दून की प्रिया को गोल्ड मेडल

सम्मान

देहरादून | कार्यालय संवाददाता

उत्तराखंड के जंगलों के लिए चीड़ और लैंटाना खतरा बन रहे हैं। इन्हें रोकने के लिए बेहतर वन प्रबंधन की जरूरत है। ये बात केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने एफआरआई में कही। वे शनिवार को एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे थे। दून की प्रिया बिष्ट को गोल्ड मेडल मिला।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि राज्य में मानव वन्यजीव संघर्ष सबसे बड़ी समस्या है। इसका बड़ा कारण जानवरों का जंगलों से बाहर निकलकर आबादी में आना है, क्योंकि आज जंगलों में पानी और भोजन खत्म हो रहा है। अगर जंगलों में जल संचय हो तो घास और पौधे स्वतः उगेंगे। इससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जानवरों को वहीं भोजन भी मिलेगा और वे बाहर नहीं आएंगे। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने विवि के 62 पीएचडी छात्रों को उपाधियां और मास्टर्स में अलग अलग विषयों के टापरों को गोल्ड मेडल बांटे। मास्टर्स में कुल 253 छात्र-छात्राएं अलग अलग विषयों में पास हुए। डीजी फारेस्ट सिद्धांत दास, आईसीएफआरई मे निदेशक डा. एससी गैरोला, एफआरआई के निदेशक अरुण सिंह रावत सहित कई लोग मौजूद रहे।

एफआरआई को पुराने स्वरूप में संवारने के निर्देशः केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने एफआरआई की बिल्डिंग को ऐतिहासिक बताते हुए जमकर तारीफ की। उन्होंने आईसीएफआरई के डायरेक्टर डा. एससी गैरोला से कहा कि इस बिल्डिंग को संवारने का काम करें। जितने बजट की जरूरत होगी सरकार दो सप्ताह में मंजूरी देगी, लेकिन संरक्षण के नाम पर उसका स्वरूप नहीं बदलना चाहिए न ही उसका काम किया हुआ दिखना चाहिए। उन्होंने राजस्थान के बिश्नोई आंदोलन जैसे पर्यावरण आंदोलन में और बलिदान देने वाले फारेस्टरों की गाथाएं भी सहेजने के लिए कहा।

एफआरआई डीम्ड विवि में केंद्रीय मंत्री ने दून की प्रिया बिष्ट को सम्मानित किया।

एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में शनिवार को गोल्ड मेडल जीतने वाले छात्रों ने खुशी का इजहार किया। • हिन्दुस्तान

वुड टेक्नोलॉजी पर रिसर्च करना चाहती हैं दून की प्रिया

दून की प्रिया बिष्ट को एमएससी वुड टेक्नोलाजी में अव्वल आने के लिए दो गोल्ड मेडल मिले। दून की रहने वाली प्रिया इसी में आगे बैंगलुरू से रिसर्च कर रही हैं। प्रिया के पिता मोहन सिंह बिष्ट आर्डनेंस फैक्ट्री में कार्यरत हैं। प्रिया ने बताया कि उनकी 12वीं तक की पढ़ाई गुरुनानक एकेडमी से हुई। वे उत्तराखंड की एकमात्र छात्रा हैं जो गोल्ड मेडल लेकर अव्वल रहीं।

इनको मिला गोल्ड

प्रिया बिष्ट, निधि, आइंद्रिला बासु, शबनम बंदोपाध्याय, अजिन शेखर, मिन्निमा उमेश, सुव्रता पाल, विजय कुमार, गुरुसिमरन कौर बग्गा

देशी परिधानों की तारीफ

प्रकाश जावड़ेकर ने कार्यक्रम में उपाधि लेने पहुंचे छात्र-छात्राओं के देशी परिधानों की तारीफ की। कहा कि आज वक्त नहीं कि हम ब्रिटिश नियमों को फालो करें। कभी हम शाम को पांच बजे बजट पेश करते थे, क्योंकि उस वक्त लंदन में 11 बजे होते थे और ब्रिटिश संसद शुरू होती थी, लेकिन आज हम सुबह 11 बजे बजट पेश करते हैं। आईजीएनएफए का उदाहरण देते हुए कहा कि एक बार वहां के दीक्षांत समारोह में मैं आया था, लेकिन वहां के पास आउट छात्रों ने विदेशी गाउन पहने थे। एफआरआई विवि ने इस परंपरा को तोड़ा है। ये काबिले तारीफ है।

वन्यजीवों के जींस में बदलाव का पता चलेगा

देहरादून | कार्यालय संवाददाता

उद्घाटन

- डब्ल्यूआईआई में खुली देश की पहली जेनेटिक लैब
- केंद्रीय मंत्री जावड़ेकर ने किया उद्घाटन, हरक भी रहे मौजूद

संकटग्रस्त प्रजाति के जीवों के जीन्स में हो रहे बदलाव का पता अब देहरादून में लगाया जा सकेगा। इसके लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान में देश की पहली जेनेटिक लैब स्थापित की गई है। शनिवार को केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावेड़कर और वन मंत्री डा. हरक सिंह ने इसका उद्घाटन किया। केंद्रीय मंत्री ने अतिथि गृह व हॉस्टल का भी उद्घाटन किया।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वाईवी झाला ने बताया कि जेनेटिक लैब में बाघ समेत तमाम वन्यजीवों के डीएनए सैंपल रखे गए हैं। इनके माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि संबंधित प्रजाति की खासियत क्या है और वह कहां-कहां पाई जाती है और उसकी जेनेटिक डायवर्सिटी (आनुवांशिक विविधता) कैसी है। उन्होंने लैब में रखे गैंडे के असली व नकली सींग के सैंपल भी केंद्रीय मंत्री को दिखाए। उन्होंने बताया कि दुनियाभर में गैंडे के सींगों की तस्करी कर उसका चूर्ण बनाकर दवा निर्माण आदि में प्रयोग किया जा रहा है।

कस्टम, कोर्ट, सीबीआई आदि के सामने कई दफा पकड़े जाने पर तस्कर सींगों को नकली करार देते हैं। इससे तस्करों को सजा दिलाना आसान हो जाता है। इस अवसर डीजी फारेस्ट सिद्धांत दास, संस्थान के कार्यवाहक निदेशक डा. जीएस रावत, पूर्व निदेशक डा. वीबी माथुर भी मौजूद रहे।

स्कूलों में बनेंगी नर्सरी बच्चे लगाएंगे एक पौधा

देहरादून | कार्यालय संवाददाता

पहल

- केंद्रीय वन मंत्री ने कहा, बच्चों में पर्यावरण संस्कार जरूरी
- पांचवीं कक्षा के बच्चे हर साल जून में एक पौधा लगाएंगे

बच्चों में पर्यावरण के संस्कार देना बेहद जरूरी है। इसके लिए स्कूलों में नर्सरियां बनाई जाएंगी।

एफआरआई डीम्ड विवि के दीक्षांत समारोह में पहुंचे केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि बच्चों को पांचवीं कक्षा से पर्यावरण के प्रति सचेत करने के लिए स्कूल नर्सरी योजना बनाई जा रही है। जिन स्कूलों में जगह है वहां पांचवीं कक्षा के बच्चे हर साल जून में एक पौधा लगाएंगे। रोज उसको सींचेंगे, खाद देंगे। इस तरह वे रोज उसे बढ़ता देखेंगे। एक साल बाद जब वो पौधा तैयार हो जाएगा तो उसे वे अपने रिजल्ट के साथ ट्रॉफी (पुरस्कार) के रूप में घर ले जाएंगे। घर में जगह हुई तो रोप देंगे। नहीं तो अपने आसपड़ोस में कहीं भी रोप देंगे। उसे बढ़ता देखकर उनका प्रकृति और जंगलों के प्रति प्रेम जागृत होगा। जो पर्यावरण बचाने में अहम भूमिका निभाएगा।

हर साल 40 हजार करोड़ की लकड़ी का आयात

वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि हमारे देश में पेड़ काटने पर पाबंदी है। इस कारण लोगों ने पेड़ लगाना बंद कर दिया है। इससे पेड़ों की संख्या बढ़ नहीं रही है। बताया कि हम हर साल 40 हजार करोड़ की लकड़ी का आयात करते हैं, जो चंदन आस्ट्रेलिया भारत से ले गया था वहां बहुतायत में हो गया है, जबकि हमारे यहां ये खत्म होने की कगार पर है। इसी तरह बांस और अन्य पेड़ यहां कम पनप रहे हैं। हमें पेड़ लगाओ, बढ़ाओ और उपयोग करो की पॉलिसी अपनानी होगी।

संघर्ष पर अंकुश के लिए कार्ययोजना बने

केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने संस्थान की वार्षिक आमसभा (एजीएम) की अध्यक्षता करते हुए संस्थान की वर्ष 2017-18 की वार्षिक रिपोर्ट को अनुमोदित किया। अब रिपोर्ट में संसद में रखा जाएगा। पद्मश्री डॉ. अनिल जोशी ने मानव-वन्यजीव संघर्ष पर अंकुश लगाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्ययोजना बनाने की बात पर बल दिया। इस अवसर पर महानिदेशक वन सिद्धांत दास, प्रमुख सचिव आनंद वर्धन, अपर महानिदेशक वन एमएस नेगी भी मौजूद रहे।

DAINIK BHASKAR

8 September, 2019

जल, जंगल और जमीन को बचाएगी केंद्र सरकार

एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में पहुंचे वन पयार्वरण एवं सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर

• जन व वित्त पोषण करने वाले होंगे नए कार्यक्रमः जावड़ेकर

भास्कर समाचार सेवा

देहरादून। वन पयावंरण एवं सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावेड़कर ने कहा कि गलत वन व पयार्वरण नीतियों के कारण ही हम चालीस हजार करोड़ रुपये की लकड़ी का आयात कर रहे हैं। हमारे देश में चंदन का महाभंडार था, लेकिन अब हम आस्ट्रेलिया से इसे आयात कर रहे है। चंदन के पेड़ों के खत्म होने के पीछे इसे इस्तेमाल पर प्रतिबंध है। इससे वन पयार्वरण व वित्त का नुकसान हो रहा है। जल्द ही इसमें बदलाव किया जाएगा।

शनिवार को भारतीय वन अनुसंधान संस्थान के सभागार में एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर पीएचडी व परास्नातक छात्रों को डिग्री प्रदान की गई। कार्यक्रम में नौ छात्रों को गोल्ड मेडल प्रदान किए गए। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जल, जंगल और जमीन को बचाने और इससे समृद्धि लाने के लिए केंद्र सरकार बहुत जल्द बड़ी योजना शुरु करेगी। उन्होंने कहा कि पेड़ लगाने और वन संरक्षण के साथ इसे समृद्धि से जोड़ने की बड़ी योजना है। जंगल की रक्षा वहां के आस पास रहने वाले लोग करते है। इसे देखते हुए सोशल फॉरेस्ट्री को बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है। कहा कि अब स्कूल नर्सरी कार्यक्रम को बड़ा आकार दिया जाएगा। इसके लिए देश भर के वन व पयार्वरण ढांचे व स्कूली ढांचे को जोड़ा जाएगा। प्रारंभ में केंद्रीय विद्यालयों व नवोदय विद्यालय में प्रयोग शुरू किया जाएगा। सामाजिक वानिकी और कृषि वानिकी के जरिए गरीबी को कम करने की भी योजना है। विगत वर्षों में कई प्रयासों के फलस्वरूप वनछादित क्षेत्र में 15,000 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि दर्ज की गयी हैं। इस संदर्भ में बास का उदाहरण देते हुए उन्होंने (पेड़ लगाओ-पेड़ बढ़ाओ-पेड़ का उपयोग करो) का नारा दिया। इस अवसर पर विशेष सचिव सिद्धांत दास ने कहा कि वनों के विनाश के कारण ही बाढ़ प्राकृतिक आपदाओं में इजाफा हो रहा है। हम जल संरक्षण व संवर्धन पर केंद्रित काम करेंगे। इस मौके पर आईसीएफआईई के महानिदेशक डा एससी गैरोला, भारतीय वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ एएस रावत ने भी विचार व्यक्त किए।

इमारत की मरम्मत के लिए देंगे आर्थिकी : भारतीय वन अनुसंधान संस्थान की दीवारों में आ रही दरारों से केंद्रीय मंत्री भी चिंता जताई। कहा कि इमारत में आ रही दरारों को ठीक करने के लिए जितना भी धन चाहिए होगा वह देंगे। इसके लिए दो सप्ताह में धन की मंजूरी दे देंगे।

मन लगाकर करें काम : स्टीव जाब्स से जुड़े संस्मरण सुनाए, उन्होंने बताया कि वह जब स्टीव जाब्स से मिले तो उन्होंने उन्हें स्मार्टफोन-आईफोन के बारे में बताया। तब उन्हें लगा कि यह दिन में आने वाला स्वप्न है, लेकिन स्टीव जाब्स ने सपने को हकीकत में बदल कर दिखाया। आज इस स्मार्टफोन ने दुनिया को बदल दिया है। भारतीय वन सेवा के एक बैच से उन्होंने पाया कि अस्सी में से सिर्फ तीन चयनित अधिकारी वन सेवा में आना चाहते थे। ऐसे लोग मन लगाकर काम नही कर सकते। प्रकाश जावेड़कर ने कहा कि छात्रों को मन लगाकर काम करना चाहिए।

दीक्षांत समारोह के दौरान छात्रा को डिग्री प्रदान करते प्रकाश जावड़ेकर।

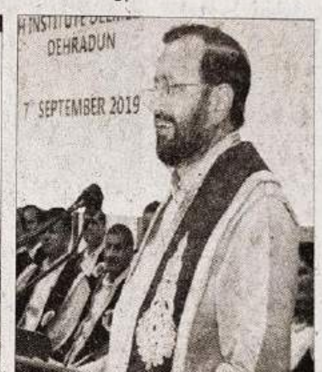

समारोह को संबोधित करते केंद्रीय मंत्री। छाया-भास्कर

नौ को मिला स्वर्ण पदक

समारोह के दौरान वानिकी के विभिन्न विषयों में 62 पीएचडी और 253 एमएससी सहित कुल 315 उपाधियां दी गई। इनके अतिरिक्त, एमएससी कोर्स मे उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कुल नौ छात्रों जिनमे निधि, ओंद्रिला बसु, शबनम बंद्योपाध्याय (वानिकी) अजीन शेखर, मितिनम जमो (पर्यावरण प्रबंधन), प्रिया बिष्ट, सुब्रत पाल (काष्ठ विज्ञान और प्रौद्योगिकी) विजया कुमार, गुरसिमरन कौर बग्गा (सेलुलोज और पेपर टेक्नोलॉजी) को स्वर्ण पदक दिए गए।

DOON DARPAN

8 September, 2019

वन्य जीव संरक्षण में जन सहभागिता की सराहनीय भूमिका: जावेडकर

देहरादून 07 सितम्बर (**दर्पण ब्यूरो**)। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) सम विश्व विद्यालय, देहरादून के ५ वें दीक्षांत समारोह का आयोजन एफआरआई के दीक्षांत सभागार में किया गया। इस अवसर पर प्रकाश जावड़ेकर केंद्रीय मंत्री,पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय एवं सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सिद्धान्त दास, वन महानिदेशक एवं विशेष सचिव, भारत सरकार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने विशेष अतिथि के रूप में शिरकत की। समारोह का प्रारम्भ कुलसचिव डॉ ए के त्रिपाठी की अगवानी में विश्वविद्यालय के अकैडमिक प्रोसेसन जिसमें मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि, कुलाधिपति, कुलपति तथा अकैडमिक काउंसिल के सदस्य शामिल रहे, के दीक्षांत सभागार में आगमन से हुआ।

इस अवसर पर विश्व विद्यालय के कुलाधिपति और महानिदेशक, भारतीय वन अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, डॉ. एस.सी. गैरोला, ने दीक्षांत समारोह के औपचारिक शुरुआत की। ए.एस. रावत, कुलपति, एफआरआई सम विश्वविद्यालय और निदेशक, एफआरआई ने गणमान्य अतिथियों, विशेष आमंत्रित सदस्यों, छात्रों और उनके अभिभावकों और सभी उपस्थित जनों का स्वागत किया और विश्वविद्यालय की रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें विश्वविद्यालय की उपलब्धियों और वानिकी और संबंधित क्षेत्रों की चुनौतियों पर आधारित कार्य योजना के साथ ही साथ भविष्य की प्रतिबद्धताओं का उल्लेख किया गया।

रावत ने छात्रों के सर्वांगीण विकास को बढावा देने और ज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। समारोह के दौरान वानिकी के विभिन्न विषयों में 62 पीएचडी और 253 एमएससी सहित कुल 315 उपाधियाँ प्रदान की गईं। इनके अतिरिक्त, एमएससी कोर्स मे उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कुल नौ छात्रों जिनमे निधि, ओद्रिला बसु, शबनम बंद्योपाध्याय (वानिकी); अजीन शेखर, मितिनम जमो (पर्यावरण प्रबंधन); प्रिया बिष्ट, सुब्रत पाल (काष्ठ विज्ञान और प्रौद्योगिकी); विजया कुमार, गुरसिमरन कौर बग्गा (सेलुलोज और पेपर टेक्नोलॉजी) को स्वर्ण पदक दिए गए।

सभा को संबोधित करते हुए, मुख्य अतिथि प्रकाश जावड़ेकर ने वृक्षो की सुरक्षा में अपने प्राणो की आहुति देने वाले स्थानीय जनों को नमन किया और वन एवं वन्य जीव संरक्षण में जन सहभागिता की सराहनीय भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने आगे बताया कि सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी तथा विध्यालय स्तरीय पौधशाला स्थापन जैसे कार्यक्रम देश में वनछादित क्षेत्र बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। छात्रों में वन सरंक्षण के प्रति जागरूकता एवं वृक्षों के प्रति प्रेम कि भावना जाग्रत करने हेतु विध्यालय स्तरीय पौधशाला की अहम भूमिका हो सकती है। भारत सरकार की योजनाओं का जिक्र करते हुए जावड़ेकर ने बताया कि वृक्ष उत्पादन एवं उनके उपयोग से संबन्धित नियमों को इस प्रकार सुगम बनाया जा रहा है ताकि जनसमान्य वृक्षारोपण के प्रति अधिक से अधिक उन्मुख हो सके।

उन्होंने कहा कि विगत वर्षों में किया गए प्रयासों के फलस्वरूप वनछादित क्षेत्र में 15,000 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि दर्ज की गयी हैं। इस संदर्भ में बास का उदाहरण देते हुए उन्होने पेड़ लगाओ पेड़ बढाओ– पेड़ का उपयोग करो का नारा दिया। उन्होने यह भी कहा की वनो में पर्याप्त भोजन एवं जल की उपलब्धता सुनिशित कर के मानव एवं वन्य जीव टकराव को रोका जा सकता है।

उन्होने उपाधि प्राप्त छात्रों से आधुनिक तकनीकों तथा प्रणालियों का उपयोग करते हुए अपने पारंपरिक मूल्यों के प्रति आदर रखने का आह्वान किया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने सम्बोधन में सिद्धान्त दास ने कहा कि आज हमारा देश वैज्ञानिक वन प्रबंध के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन का गवा बना हें। पूर्व कि प्राथमिकताउ जैसे काष्ठ एवं गैर काष्ठ उप कि जगह वन एवं वन्य जी संरक्षण, आजीविका अर्जन एवं ज संरक्षण जैसे विषय आज ज्याद प्रासंगिक हो गए हें। प्रधानमं जल स्वावलम्बन योजना का जि करते हुए उन्होने बताया कि इस कार्यान्वयन के फलस्वरू राजस्थान में केवल चार वर्षों भूमिगत जल स्तर 4.2 फीट ब गया हें। उन्होने बताया कि इ प्रकार वन्य जीव संरक्षण में प्रभा भूमिका निभाता हैं। इस प्रयास देश में विगत चार वर्षों के दौरा बाघों कि संख्या 2226 से बढ़ 2967 हो गयी है। जरूरी हें।

विश्वविद्यालय के कुलाधिप डॉ. एस.सी. गैरोला ने अप संबोधन में आईसीएफआरई द्वा उठाए गए कुछ महत्वपूर्ण पह जैसे देश के लिए दूसरा राष्ट्री वानिकी अनुसंधान योज (एनएफआरपी) तैयार करन वानिकी विस्तार रणनीति क योजना, कर्मचारियों के क्षम विकास के बारे में बताया।

AMAR UJALA
8 September, 2019

पेड़ काटने के नियम सरल करेगी सरकार : जावड़ेकर

देहरादून। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि सरकार वृक्षारोपण को बढ़ावा देने और पेड़ काटने के नियम सरल करेगी। इसके अलावा छात्रों में बचपन से वन संरक्षण के प्रति प्रेम और पर्यावरण के प्रति जागरूकता के लिए स्कूल नर्सरी योजना शुरू करेगी।

शनिवार को एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में पहुंचे जावड़ेकर ने कहा कि जिन पेड़ों की प्रजाति के पहले भारत में जंगल हुआ करते थे अब उनकी लकड़ी हमें आयात करनी पड़ रही है। यह इसलिए हो रहा है कि हमारे यहां पेड़ों के काटने नियम इतने कड़े हैं कि लोग उन पेड़ों को लगाने ही बंद कर दे रहे हैं।

वन संरक्षण के प्रति जागरुकता के लिए स्कूल नर्सरी योजना शुरु करेंगे

इसी को देखते हुए केंद्र सरकार अब अधिक से अधिक पेड़ लगाने का बढ़ावा देने के साथ। इनके काटने के नियम सरल करेगी। इसके लिए 'पेड़ लगाओ, पेड़ बढ़ाओ और पेड़ का उपयोग करो' का नारा दिया जाएगा। सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी और विद्यालयस्तरीय पौधशाला स्थापना जैसे कार्यक्रम देश में वन क्षेत्र बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

उन्होंने कहा कि विगत वर्षों में केंद्र सरकार के प्रयासों से वन क्षेत्र में 15000 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है। मानव एवं वन्य जीव के टकराव को रोकने के लिए जंगलों में पर्याप्त भोजन एवं जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के प्रयास भी किए जा रहे हैं।

DAINIK JAGRAN

8 September, 2019

16 करोड़ से भरेगी ऐतिहासिक एफआरआइ भवन की दरार

केंद्रीय वन मंत्री ने दो सप्ताह में मरम्मत के प्रस्ताव को स्वीकृति देने की बात कही

जागरण संवाददाता, देहरादून: ब्रिटिशकाल में वर्ष 1923 में निर्मित वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) के मुख्य भवन पर उभरी लंबी दरार को करीब 20 साल के लंबे इंतजार के बाद भरा जा सकेगा। इसके लिए तैयार किए गए करीब 16 करोड़ रुपये के प्रस्ताव को केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने दो सप्ताह के भीतर स्वीकृति देने की बात कही है।

शनिवार को वन अनुसंधान संस्थान (सम) विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री जावड़ेकर ने प्रस्ताव को स्वीकृति देने के लिए एक शर्त भी जोड़ी। उन्होंने कहा कि मरम्मत कार्य में इसकी ऐतिहासिक वास्तुकला (रोमन आर्किटेक्चर) से कोई छेड़छाड़ नहीं की जानी चाहिए। साथ ही यह ध्यान भी रखा जाए कि मरम्मत करते समय उसके निशान कहीं पर न दिखाई दें। क्योंकि इस भवन की खूबसूरती अद्वितीय है और इसे हर हाल में बरकरार रखा जाना जरूरी है।

प्रस्ताव को लेकर एफआरआइ के निदेशक एएस रावत ने बताया कि वर्ष 1999 में चमोली में आए 6.8 रिक्टर स्केल के भूकंप के दौरान यह दरार उभर आई थी। दरार मुख्य भवन के पिछले हिस्से के साथ भवन के ऊपरी गुंबद की तरफ भी उभरी है। समय के साथ इस दरार से बारिश का पानी भी रिसने लगा है। दरार भरने को लेकर पूर्व में आइआइटी रुड़की से भी सहयोग मांगा गया था, मगर उनकी तरफ से इस पर कोई काम न किए जाने पर सीबीआरआइ (सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट) रुड़की से डीपीआर बनवाई गई। सीबीआरआइ ने 16 करोड़ रुपये का एस्टीमेट तैयार किया है और मरम्मत कार्य के लिए केंद्रीय लोनिवि का चयन किया गया है। केंद्र से प्रस्ताव पास होते ही मरम्मत का कार्य शुरू करा दिया जाएगा।

शनिवार को भारतीय वन्यजीव संस्थान में जेनेटिक लैब के उद्घाटन के दौरान वैज्ञानिकों से गैंडे के असली व नकली सींग की जानकारी प्राप्त करते केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर • जागरण

वन शहीद स्मारक से जुड़ेगा विश्नोई समुदाय का जौहर

केंद्रीय मंत्री जावड़ेकर ने एफआरआइ परिसर में वनों की रक्षा करते हुए प्राण गंवाने वाले कार्मिकों की याद में बनाए गए शहीद स्मारक की सराहना की। उन्होंने निर्देश दिए कि इस स्मारक में वन संरक्षण का प्रतीक बने जोधपुर के विश्नोई समाज को भी स्थान दिया जाना न्यायोचित होगा। क्योंकि वर्ष 1730 में जोधपुर के महाराज अजय सिंह ने जब विशाल महल बनाने के लिए पेड़ों के कटान का आदेश दिया तो यह समाज पेड़ों से लिपट गया था। वन संरक्षण के लिए डटे बिश्नोई समाज के 300 से अधिक लोगों को अपनी जान भी गंवानी पड़ी थी।

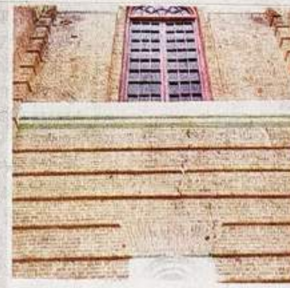

एफआरआइ के भवन पर दिखाई दे रहीं दरारें • जागरण

संकटग्रस्त प्रजातियों के जीन में हो रहे बदलावों का चलेगा पता

जागरण संवाददाता, देहरादून: केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री ने वार्षिक आमसभा के बाद भारतीय वन्यजीव संस्थान में नवनिर्मित जेनेटिक लैब का उद्घाटन किया। यह देश की अपनी तरह की पहली लैब है और इसके माध्यम से संकटग्रस्त प्रजातियों के जीन में हो रहे बदलाव की अहम जानकारी अब दून में ही पता चल पाएगी। अब तक इसके लिए हैदराबाद स्थित सीसीएमबी (सेंटर फॉर सेल्यूलर एंड मॉलीक्यूलर बायोलॉजी) पर निर्भर रहना पड़ता था।

इसके साथ ही केंद्रीय मंत्री ने अतिथि गृह व हॉस्टल का भी उद्घाटन किया। वैज्ञानिकों ने केंद्रीय मंत्री को जेनेटिक लैब में बारे में तमाम तरह की जानकारी दी। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वाईवी झाला ने केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर को बताया कि जेनेटिक लैब में बाघ समेत तमाम वन्यजीवों के डीएनए सैंपल रखे गए हैं। इनके माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि संबंधित प्रजाति की खासियत क्या है और वह कहां-कहां पाई जाती है और उसकी जेनेटेकि डायवर्सिटी (आनुवांशिक विविधता) कैसी है। उन्होंने लैब में रखे गैंडे के असली व नकली सींग के सैंपल पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्वभर में गैंडे के सींगों की तस्करी उसका चूर्ण बनाकर दवा निर्माण आदि में किया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सींग के चूर्ण के एक ग्राम की कीमत 1.79 लाख रुपये है। इसके चलते कई दफा नकली सींगों की तस्करी भी की जाती है। कस्टम, कोर्ट; सीबीआइ आदि के समाने कई दफा पकड़े जाने पर तस्कर सींगों को नकली करार देते हैं। ऐसे में संस्थान में पहले से मौजूद फोरेंसिक लैब के जरिये आसानी से पता लगाया जा सकता है कि सींग असली है या नकली। तमाम तरह के डीएनए के डेटा से यह जानकारी भी दी जा सकती है कि गैंडा या अन्य वन्यजीव किस क्षेत्र में पाए जाते हैं। इससे तस्करों को सजा दिलाना आसान हो जाता है। इस अवसर पर उत्तराखंड के वन मंत्री डॉ. हरक सिंह रावत, देश के महानिदेशक वन सिद्धांत दास, संस्थान के कार्यवाहक निदेशक डॉ. जीएस रावत, पूर्व निदेशक डॉ. वीबी माथुर आदि उपस्थित रहे।

एक बाघ के लिए जंगल में 500 हिरन का होना बेहद जरूरी

जागरण संवाददाता, देहरादून: केंद्रीय वन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने वन विशेषज्ञों के सुझाव के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उस भावी योजना की जानकारी दी, जिसमें वन्यजीव संरक्षण के लिए वन क्षेत्रों में जल संरक्षण को पहले स्थान पर रखा गया है।

मंथन

- हिरन आदि के लिए वनस्पति और वनस्पति के लिए पानी जरूरी
- देश में बाढ़ के हालात के बावजूद स्रोतों के रीचार्ज न होने पर चिंता

एफआरआइ डीम्ड यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जल वनों का आधार है। इसी पर निर्भर करता है कि वन की जैवविविधता कैसी होगी। वहीं, महानिदेशक वन सिद्धांत दास ने जल संरक्षण की महत्ता को आसान शब्दों में समझाया। उन्होंने कहा कि एक बाघ के संरक्षण के लिए वन में 500 हिरन आदि जानवर जरूरी हैं। वन में हिरन आदि की संख्या तब बढ़ेगी, जब वहां की वनस्पति बेहतर होगी और बेहतर वनस्पति के लिए जंगल में पानी के स्रोत अच्छी स्थिति में होने जरूरी हैं। उन्होंने इस बात पर चिंता भी जाहिर की कि देशभर में बाढ़ के हालात रहे हैं, मगर इतनी बारिश के बाद भी वनों के जलस्रोत पर्याप्त रीचार्ज नहीं हो सके। इसका मतलब यह है कि हमारे वनों में पानी को सोखने की क्षमता कम हो रही है। उत्तराखंड में चीड़ के वनों की बहुलता के चलते स्थिति और विकट है। क्योंकि इससे झड़ने वाले पिरूल की परत में पानी जमीन में समाने की जगह तेजी से बह जाता है। इसकी वजह यह भी है कि पिरूल की परत के चलते इसके नीचे पानी को रोकने वाली वनस्पतियों का विकास नहीं हो पाता। लिहाजा, वनों के जल स्रोतों को बेहतर बनाने के लिए नई रणनीति पर काम चल रहा है।

PUNJAB KESARI

8 September, 2019

छात्र-छात्राओं में जोश भर गए जावड़ेकर

स्टीव जाब्स का संस्मरण सुना किया प्रेरित, कई प्रतिभाओं को मिला स्वर्ण पदक

62 पीएचडी और 253 एमएससी छात्रों को मिली डिग्रियां

देहरादून, 7 सितंबर (स.ह.) : वन, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर एफआरआई डीम्ड यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं के साथ कुछ अलग ही तरह से रूबरू हुए। उन्होंने छात्रों से कुछ नया और बड़ा करने का आह्वान किया। इस अवसर पर निधि, ओद्रिला बसु, शबनम बंधोपाध्याय, अजीत शेखर, मितिनम जमो, गुरसिमरन कौर बग्गा, प्रिया बिष्ट, सुब्रत पाल, विजया कुमार को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। शनिवार को दीक्षांत समारोह में अपने संबोधन में उन्होंने स्टीव जाब्स से जुड़े संस्मरण सुनाए। उन्होंने बताया कि वह जब स्टीव जाब्स से मिले, तो उन्होंने उन्हें स्मार्टफोन-आईफोन के बारे में बताया। तब उन्हें लगा कि यह दिन में आने वाला स्वप्न है। लेकिन स्टीव जाब्स ने सपने को हकीकत में बदल कर दिखाया। आज इस स्मार्टफोन ने दुनिया को बदल दिया है।

अपने संबोधन में वह बोले कि भारतीय वन सेवा के एक बैच में गहन बातचीत में उन्होंने पाया कि अस्सी में से सिर्फ तीन चयनित अधिकारी वन सेवा में आना चाहते थे। ऐसे लोग मन लगाकर काम नहीं कर सकते। प्रकाश जावेड़कर ने कहा कि छात्रों को मन लगाकर काम करना चाहिए। शोध और परास्नातक डिग्री लेने वाले छात्र वानिकी की दुनिया में बड़े बड़े लक्ष्य हासिल कर सकते हैं।

एफआरआई इमारत की मरम्मत के लिए देंगे धन

भारतीय वन अनुसंधान संस्थान की ऐतिहासिक बिल्डिंग में आ रही दरारों से केंद्रीय मंत्री भी बेहद चिंतित हैं। वह सौ साल पुरानी इस अतुलनीय इमारत पर मंडरा रहे खतरों से चिंतित हैं। केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने एफआरआई सभागार में अपने संबोधन में कहा कि इमारत में आ रही दरारों को ठीक करने के लिए जितना भी धन चाहिए, वह देंगे। इसके लिए दो सप्ताह में धन की मंजूरी दे देंगे।

JAN BHARAT MAIL

8 September, 2019

वन अनुसंधान संस्थान का पाँचवां दीक्षांत समारोह आयोजित

देहरादून, संवाददाता। वन अनुसंधान संस्थान (एफ आर आइ) सम विश्वविद्यालय, देहरादून के 5वें दीक्षांत समारोह का आयोजन एफआरआई के दीक्षांत सभागार में किया गया। इस अवसर पर प्रकाश जावड़ेकर, माननीय केंद्रीय मंत्री,पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय एवं सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सिद्धान्त दास, वन महानिदेशक एवं विशेष सचिव, भारत सरकार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने विशेष अतिथि के रूप में शिरकत की। समारोह का प्रारम्भ कुलसचिव डॉ ए के त्रिपाठी की अगवानी में विश्वविद्यालय के अकेडमिक प्रोसेसन जिसमें मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि, कुलाधिपति, कुलपति तथा अकैडमिक काउंसिल के सदस्य शामिल रहे, के दीक्षांत सभागार में आगमन से हुआ। तदुपरान्त विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और महानिदेशक, भारतीय वन अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, डॉ एस.सी. गैरोला, ने दीक्षांत समारोह के औपचारिक शुरुआत की। तत्पश्चात, श्री ए.एस. रावत, कुलपति, एफआरआइ सम विश्वविद्यालय और निदेशक, एफआरआई ने गणमान्य अतिथियों, विशेष आमंत्रित सदस्यों, छात्रों और उनके अभिभावकों और सभी उपस्थित जनों का स्वागत किया और विश्वविद्यालय की रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें विश्वविद्यालय की उपलब्धियों और वानिकी और संबंधित क्षेत्रों की चुनौतियों पर आधारित कार्य योजना के साथ ही साथ भविष्य की प्रतिबद्धताओं का उल्लेख किया गया। रावत ने छात्रों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने और ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान हेतु विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। समारोह के दौरान वानिकी के विभिन्न विषयों में 62 पीएचडी और 253 एमएससी सहित कुल 315 उपाधियाँ प्रदान की गईं। इनके अतिरिक्त, एमएससी कोर्स मे उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कुल नौ छात्रों जिनमे निधि, ओद्रिला बसु, शबनम बंद्योपाध्याय (वानिकी); अजीन शेखर, मितिनम जमो (पर्यावरण प्रबंधन); प्रिया बिष्ट, सुब्रत पाल (काष्ठ विज्ञान और प्रौद्योगिकी); विजया कुमार, गुरसिमरन कौर बग्गा (सेलुलोज और पेपर टेक्नोलॉजी) को स्वर्ण पदक दिए गए। सभा को संबोधित करते हुए, मुख्य अतिथि प्रकाश जावड़ेकर ने वृक्षो की सुरक्षा में अपने प्राणो की आहुति देने वाले स्थानीय जनों को सादर नमन किया और वन एवं वन्य जीव संरक्षण में जन सहभागिता की महती भूमिका को रेखांकित किया। उन्होने आगे बताया कि सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी तथा विध्यालय स्तरीय पौधशाला स्थापन जैसे कार्यक्रम देश में वनछादित क्षेत्र बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

RASHTRIYA SAHARA

8 September, 2019

बढ़ता मानव-वन्यजीव संघर्ष चिंतनीय ठोस कदम उठाने जरूरी : जावड़ेकर

केंद्रीय वन व पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा- वन नियमों को बनाया जा रहा सुगम, वन संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय स्तरीय पौधशाला विकसित करने पर जोर

शनिवार को एफआरआई डीम्ड विश्वविद्यालय के पांचवें दीक्षांत समारोह में की शिरकत, पीएचडी व स्नातकोत्तर के 315 छात्र-छात्राओं को प्रदान की डिग्री, भविष्य की शुभकामनाएं

वन महानिदेशक बोले वन प्रबंधन के क्षेत्र में परिवर्तन का गवाह बन रहा देश

सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

केंद्रीय वन, पर्यावरण व सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधरोपण को बढ़ावा देने पर जोर दिया है। कहा कि विद्यालय स्तरीय पौधशाला विकसित कर इस मुहिम को सफल बनाया जा सकता है। आधुनिक तकनीक व प्रणालियों के उपयोग में पारंपरिक मूल्यों के प्रति आदर बनाये रखने की बात भी उन्होंने कही है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत सरकार द्वारा वृक्ष उत्पादन व उनके उपयोग से संबंधित नियमों को सुगम बनाने का प्रतिफल रहा है देश में पिछले वर्षो में वनाच्छादित क्षेत्र में 15 हजार वर्ग किमी की वृद्धि हुई है। यह बात उन्होंने शनिवार को वन अनुसंधान संस्थान के सम विश्वविद्यालय (डीम्ड यूनिवर्सिटी) के पांचवें दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शिकरत करते हुए कही। एफआरआई के सभागार में आयोजित समारोह में उन्होंने स्नातकोत्तर व पीएचडी पाठ्यक्रम के 315 छात्र-छात्राओं को उपाधि प्रदान की है। इनमें 62 पीएचडी व 253 एमएससी के छात्र-छात्राएं शामिल रही। स्नातकोत्तर के अलग-अलग पाठ्यक्रमों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले नौ छात्र-छात्राओं को गोल्ड मेडल भी प्रदान किया गया।

इस अवसर पर केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने पीएचडी व स्नातकोत्तर की डिग्री से दीक्षित सभी छात्र-छात्राओं को भविष्य की शुभकामना दी। अपने संबोधन में उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधरोपण की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। बढ़ते मानव-वन्यजीव संघर्ष पर उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि इस दिशा में तेजी से कार्य किया जाना चाहिए। वनों में पर्याप्त भोजन व जल की उपलब्धता से मानव व वन्यजीवों के बीच होने वाले टकराव को रोका जा सकता है। वन व वन्यजीव संरक्षण में जन सहभागिता पर भी उन्होंने जोर दिया है। कहा कि सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी के साथ ही विद्यालय स्तरीय पौधशाला स्थापन जैसे कार्यक्रम देश में वनाच्छादित क्षेत्र बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं। कहा कि कई नियमों को सुगम बनाया गया है, ताकि जनसामान्य पौधरोपण के लिए उन्नमुख हो सके। इस अवसर पर उन्होंने 'पेड़ लगाओ, पेड़ बढ़ाओ व पेड़ का उपयोग करो' नारा भी दिया है। उन्होंने उम्मीद जताई है कि पीएचडी व स्नातकोत्तर की डिग्री से दीक्षित हुए छात्र-छात्राएं वन व वन्यजीव संरक्षण की दिशा में आधुनिक तकनीक व प्रणालियों का उपयोग करते हुए पारंपरिक मूल्यों का भी बखूबी निवर्हन करेंगे।

श्रेष्ठ प्रदर्शन पर मिला गोल्ड मेडल

एमएससी वानिकी पाठ्यक्रम में निधि, ओंद्रिला, बसु व शबनम बंद्योपाध्याय, पर्यावरण प्रबंधन में अजीन शेखर व मितिनम जमो, काष्ठ विज्ञान व प्रौद्योगिकी में प्रिया बिष्ट, सुव्रत पाल और सेलुलोज व पेपर टेक्नोलॉजी में विजय कुमार व गुर सिमरन कौर बग्गा को गोल्ड मिला है।

वन एवं पर्यावरण मंत्रालय में विशेष सचिव व वन महानिदेशक सिद्धांत दास ने कहा कि मौजूदा समय में वन प्रबंधन के क्षेत्र में देश आमूलचूल परिवर्तन का गवाह बना है। प्रधानमंत्री जल स्वालंबन योजना के क्रियान्वयन के बाद राजस्थान जैसे मरू भूमि में भूजल स्तर में चार फीट तक वृद्धि होने की बात भी उन्होंने कही है। कहा कि जल संरक्षण खाद्य श्रृंखला यानी फूड चेन पर भी सकारात्मक प्रभाव डालता है। इसका उदाहरण है कि पिछले चार साल में देश में बाघों की संख्या 2226 से बढ़कर 2967 हो गई है। इससे पहले भारतीय वानिकी अनुसंधान एंव शिक्षा परिषद के महानिदेशक व एफआरआई सम विवि के कुलाधिपति डा. एससी गैरोला ने दीक्षांत समारोह में शिरकत कर रहे अतिथियों का स्वागत किया। एफआरआई के निदेशक व विवि के कुलपति अरुण सिंह रावत ने विश्वविद्यालय की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। विवि के डीन डा. एचएस गिन्वाल ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया। संस्थान के कुलसचिव डा. एके त्रिपाठी समेत विभिन्न संस्थानों के उच्चाधिकारी, अभिभावक व छात्र-छात्राएं भी इस अवसर पर उपस्थित रही।

SHAH TIMES

8 September, 2019

वन अनुसंधान संस्थान सम विवि का 5वां दीक्षांत समारोह

वन संरक्षण के प्रति छात्रों में जागरूकता व प्रेम भावना जरूरी : जावडेकर

■ **मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद रहे केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री प्रकाश**

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) सम विश्वविद्यालय, देहरादून के 5वें दीक्षांत समारोह का आयोजन शनिवार को एफआरआई के दीक्षांत सभागार में किया गया।

मुख्य अतिथि केन्द्रीय पर्यावरण , वन और जलवायु मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने सबसे पहले वृक्षों की सुरक्षा में अपने प्राणों की आहुति देने वाले स्थानीय जनों को सादर नमन किया और वन एवं वन्य जीव संरक्षण में जन सहभागिता की महती भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने आगे बताया कि सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी तथा विद्यालय स्तरीय पौधशाला स्थापन जैसे कार्यक्रम देश में वनाछादित क्षेत्र बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। छात्रों में वन संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं वृक्षों के प्रति प्रेम की भावना जाग्रत करने के लिए विद्यालय स्तरीय पौधशाला की अहम भूमिका हो सकती है।

भारत सरकार की योजनाओं का जिक्र करते हुए जावड़ेकर ने बताया कि वृक्ष उत्पादन एवं उनके उपयोग

62 पीएचडी सहित 315 को उपाधियां दी गई

देहरादून। समारोह के दौरान वानिकी के विभिन्न विषयों में 62 पीएचडी और 253 एमएससी सहित कुल 315 उपाधियाँ प्रदान की गईं। इनके अतिरिक्त, एमएससी कोर्स मे उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कुल नौ छात्रों जिनमे निधि, ओ. द्रिला बसु, शबनम बंद्योपाध्याय (वानिकी), अजीन शेखर, मितिनम जमो (पर्यावरण प्रबंधन), प्रिया बिष्ट, सुब्रत पाल (काष्ठ विज्ञान और प्रौद्योगिकी), विजया कुमार, गुरसिमरन कौर बग्गा (सेलुलोज और पेपर टेक्नोलॉजी) को स्वर्ण पदक दिए गए।

नारा दिया। उन्होने यह भी कहा की वनों में पर्याप्त भोजन एवं जल की उपलब्धता सुनिश्चित कर के मानव एवं वन्य जीव टकराव को रोका जा सकता है। उन्होंने उपाधि प्राप्त छात्रों से आधुनिक तकनीकों तथा प्रणालियों का उपयोग करते हुए अपने पारंपरिक मूल्यों के प्रति आदर रखने का आह्वान किया। विशिष्ट

समारोह में ये रहे मौजूद

देहरादून। समारोह में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और महानिदेशक, भारतीय वन अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, डॉ. एससी गैरोला, कुलसचिव डॉ. एके त्रिपाठी , डॉ. एचएस गिन्वाल, डीन, एफआरआई सम विश्वविद्यालय के धन्यवाद ज्ञापन

SHAH TIMES

8 September, 2019

वन अनुसंधान संस्थान सम विवि का 5वां दीक्षांत समारोह

वन संरक्षण के प्रति छात्रों में जागरूकता व प्रेम भावना जरूरी : जावडेकर

■ **मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद रहे केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री प्रकाश**

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) सम विश्वविद्यालय, देहरादून के 5वें दीक्षांत समारोह का आयोजन शनिवार को एफआरआई के दीक्षांत सभागार में किया गया।

मुख्य अतिथि केन्द्रीय पर्यावरण , वन और जलवायु मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने सबसे पहले वृक्षों की सुरक्षा में अपने प्राणों की आहुति देने वाले स्थानीय जनों को सादर नमन किया और वन एवं वन्य जीव संरक्षण में जन सहभागिता की महती भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने आगे बताया कि सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी तथा विद्यालय स्तरीय पौधशाला स्थापन जैसे कार्यक्रम देश में वनाछादित क्षेत्र बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। छात्रों में वन संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं वृक्षों के प्रति प्रेम की भावना जाग्रत करने के लिए विद्यालय स्तरीय पौधशाला की अहम भूमिका हो सकती है।

भारत सरकार की योजनाओं का जिक्र करते हुए जावड़ेकर ने बताया कि वृक्ष उत्पादन एवं उनके उपयोग

62 पीएचडी सहित 315 को उपाधियां दी गई

देहरादून। समारोह के दौरान वानिकी के विभिन्न विषयों में 62 पीएचडी और 253 एमएससी सहित कुल 315 उपाधियाँ प्रदान की गईं। इनके अतिरिक्त, एमएससी कोर्स मे उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कुल नौ छात्रों जिनमे निधि, ओ. द्रिला बसु, शबनम बंद्योपाध्याय (वानिकी), अजीन शेखर, मितिनम जमो (पर्यावरण प्रबंधन), प्रिया बिष्ट, सुब्रत पाल (काष्ठ विज्ञान और प्रौद्योगिकी), विजया कुमार, गुरसिमरन कौर बग्गा (सेलुलोज और पेपर टेक्नोलॉजी) को स्वर्ण पदक दिए गए।

नारा दिया। उन्होने यह भी कहा की वनों में पर्याप्त भोजन एवं जल की उपलब्धता सुनिश्चित कर के मानव एवं वन्य जीव टकराव को रोका जा सकता है। उन्होंने उपाधि प्राप्त छात्रों से आधुनिक तकनीकों तथा प्रणालियों का उपयोग करते हुए अपने पारंपरिक मूल्यों के प्रति आदर रखने का आह्वान किया। विशिष्ट

समारोह में ये रहे मौजूद

देहरादून। समारोह में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और महानिदेशक, भारतीय वन अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, डॉ. एससी गैरोला, कुलसचिव डॉ. एके त्रिपाठी , डॉ. एचएस गिन्वाल, डीन, एफआरआई सम विश्वविद्यालय के धन्यवाद ज्ञापन

I- NEXT

8 September, 2019

PICS: DAINIK JAGRAN I NEXT

कॉन्वोकेशन सेरेमनी

dehradun@inext.co.in

एफआरआई में कॉन्वोकेशन सेरेमनी का आयोजन किया गया. इस मौके पर 315 स्टूडेंट्स को डिग्री दी गई, 9 स्टूडेंट्स को मेडल से नवाजा गया. केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर ने स्टूडेंट्स को डिग्री प्रदान करते हुए वन संरक्षण की चुनौतियों को स्वीकार करने का आह्वान किया.

INVITE US:

If you are throwing a party, celebrating any festival or mounting an exhibition, we will report it. Call us at 9012744400 or mail at dehradun@inext.co.in

For more party photos, go to www.inextlive.com/citylights

iam framed

GARHWAL POST

8 September, 2019

FRI (Deemed) University celebrates 5th Convocation

Encourage common people to plant trees: Prakash Javadekar

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 7 Sep: Forest Research Institute (FRI) Deemed to be University celebrated its 5th Convocation, today, in the Convocation Hall of FRI.

Prakash Javadekar, Union Environment, Forests and Climate Change (MoEF&CC), and Information & Broadcasting Minister, was the Chief Guest on the occasion. Siddhanta Das, Director General of Forests and Special Secretary, attended the function as Special Guest. The ceremony started with the arrival of the academic procession comprising the Chief Guest, Special Guest, Chancellor, Vice Chancellor and members of the Academic Council led by Registrar, Dr AK Tripathi.

At the outset, Dr SC Gairola, Chancellor of the University and DG, ICFRE, declared the convocation open. Thereafter, AS Rawat, Vice-Chancellor of the University and Director, FRI, welcomed the dignitaries, special invitees, students and their parents and all present. He presented a report on the university mentioning the accomplishments and future aspirations to become the first-rank forestry based Research University in the world with focused action plan to meet the challenges of forestry and related areas. He further affirmed the commitment of the university to promoting all round development of the students and to contribute significantly to the sphere of knowledge.

Altogether, 315 degrees including 62 PhD and 253 MSc were conferred in different disciplines and programmes of forestry. Nine gold medals were awarded to the toppers of MSc courses, namely Nidhi, Oindrila Basu, Shabnam Bandyopadhyay (Forestry); Ajin Sekhar, Mitinam Jamoh (Environment Management), Priya Bisht, Subrata Pal (Wood Science & Technology); Vijya Kumar, and Gursimaran Kaur Bagga (Cellulose and Paper technology).

Addressing the gathering, Chief Guest Prakash Javadekar recalled the sacrifice of the local people in saving trees and underlined the role of peoples' participation in forest and wild life conservation. He talked about the approaches like social forestry and agroforestry and awareness generation among school students through raising nurseries in the school premises for increasing tree cover in the country. The efforts made during the last five years have resulted in increase of tree cover up to 15,000 sq. kms, he claimed. Narrating the policies of the Government of India, Javadekar stressed that the rules and regulations needed to be framed in a manner that the common people could come forward to encourage tree planting for which he gave the slogan 'Plant Trees, Grow Trees, and Use Trees' which has been brought into practice in species like bamboo. Javadekar stated that by ensuring the availability of adequate food and water in the forests, the problem of man-animal conflict could effectively be tackled. He called upon the awardees to respect the values while working with most modern technologies and systems.

Siddhanta Das stated that the country was witnessing a paradigm shift in priorities of scientific forest management. Contrary to the earlier priorities like timber and non-wood forest products, now conservation of forests and wildlife, livelihood generation, and water conservation had become the top agenda of the contemporary management strategies. Speaking about the impact of 'Pradhanmantri Jal Swavalamban Yojana' implemented in Rajasthan, he mentioned that due to the scheme there was a significant rise of 4.2 feet in the water table in just four years. Water conservation significantly impacts the food chain thus contributing to wildlife conservation as evidenced from the increase in tiger population from 2226 to 2967 during the last four years. Water conservation was imperative in attaining the target of 2.5-3.0 billion ton of carbon sequestration. It needed to be kept in mind that the timber and other forest produce were the byproducts while the main forest produce was water, he added.

In his address, Chancellor Dr SC Gairola talked about some of the important initiatives of the ICFRE like preparation of second National Forestry Research Plan (NFRP) for the country, Forestry Extension Strategy Action Plan, HRD Plan for capacity building of ICFRE employees, implementation of green skill development programme of the ministry, preparation of DPR for rejuvenation of 13 major rivers through forestry interventions, national REDD+ strategy 2018, in line with the national priorities. He further stated that ICFRE had taken important steps in re-vitalisation of forestry education in India. MOUs had been signed with international organisations including University of British Columbia, Canada, Swedish University of Agricultural Sciences, Sweden, Gottingen University, Germany, Institute of Forestry, Nepal and national institutions viz: ICAR, TERI, TIFAC, GICA, ZSI and IIM, Kashipur.

The convocation was declared closed by the Chancellor of FRI Deemed to be University and the programme ended with the vote of thanks proposed by Dean Dr HS Ginwal.

HINDUSTAN TIMES
8 September, 2019

Foresters asked to work towards green cover

HT Correspondent
letter@hindustantimes.com

DEHRADUN: Encouraging young foresters to follow the policy of "plant trees, grow trees and use trees", union minister for environment, forest and climate change Prakash Javadekar on Saturday felicitated over 300 candidates at the Forest Research Institute here.

The minister was attending the 5th convocation ceremony of the Forest Research Institute.

"I congratulate all those who have graduated today. You all have worked very hard to reach the stage where you are right now and I want to encourage you all to work to preserve our forests and work towards increasing the forest cover in the country," said union minister while addressing the ceremony.

The minister conferred doctorates to 62 candidates in various disciplines of Forestry and 253 candidates were conferred with Masters of Science degrees in Forestry, Wood Science & Technology, Environment Management and Cellulose and Paper technology during the convocation. Nine candidates were also given gold medals for outstanding performance.

JAVADEKAR ALSO STRESSED ON THE NEED FOR PROMOTING SOCIAL AND AGROFORESTRY IN A SUSTAINABLE MANNER

The union minister also stressed on the need for promoting social and agroforestry in a sustainable manner, while working with the ground level staff and those who live near forest areas.

"Ecological value of forests is tremendous for any country. In the past five years tree cover has increased by 15,000 sq kilometres in the country and we have been the pioneer country in increasing tree cover in the world. We have to continue working like this," said Javadekar.

Siddhantha Das, director general of forests, stressed on the need for conservation of water to protect forests in the country. "Degradation of forests is a major reason for so many flood like situations across the country. The surface layer of soil gets washed away and water does not percolate down," said Das.

Meanwhile, the minister also visited Wildlife Institute of India and chaired the 23rd Annual General Meet of the Wildlife Society. During the meeting, the minister asked scientists at the institute to conduct more research on how human-animal conflict can be reduced, especially focusing on the rising cases of leopards entering human habitats.

THE HIMACHAL TIMES

8 September, 2019

FRI University celebrates 5th Convocation

DEHRADUN,SEPT 7(HTNS) Forest Research Institute (FRI) Deemed to be University, Dehradun celebrated their 5th Convocation on September 7 in the Convocation Hall of FRI.

Prakash Javadekar, Union Minister for Ministry of Environment, Forests and Climate Change (MoEF&CC), and Information & Broadcasting,Govt.of India was the Chief Guest. Siddhanta Das, Director General of Forests and Special Secretary, Govt. of India, MoEF&CC attended the function as Special Guest. The ceremony started with the arrival of the academic procession comprising of the Chief Guest, Special Guest, Chancellor, Vice Chancellor and members of the Academic Council led by Registrar, Dr. A.K. Tripathi.

At the outset, Dr. S.C. Gairola, Chancellor of the University and DG, ICFRE declared the convocation open.

Thereafter, A.S. Rawat, Vice-chancellor of the University and Director, FRI welcomed the dignitaries, special invitees, students and their parents and presented a report of the university mentioning the accomplishments and future aspirations of the university to become the first-rank forestry based Research University in the world with focused action plan to meet the challenges of forestry and related areas.

He further affirmed the commitment of the university to promote all round development of the students and to contribute significantly to the sphere of knowledge.

Altogether 315 degrees including 62 Ph.D. and 253 M.Sc. were conferred in different disciplines and programmes of forestry. Nine gold medals were awarded to the toppers of M.Sc. courses namely Nidhi, Oindrila Basu, Shabnam Bandyopadhyay (Forestry); Ajin Sekhar, Mitinam Jamoh (Environment Management), Priya Bisht, Subrata Pal (Wood Science & Technology); Vijya Kumar, Gursimaran Kaur Bagga (Cellulose and Paper technology).

Addressing the gathering, the chief guest Prakash Javadekar recapitulated the profound memory of the sacrifice of the local people in saving trees and underlined the role of peoples' participation in forest and wild life conservation. He talked about the approaches like social forestry and agroforestry and awareness generation among school students through raising nursery in the school premises for increasing tree cover in the country.

The efforts made during the last five years have resulted in increase of tree cover upto 15,000 sq. km.

Narrating the policies of the Govt. of India, Javadekar stressed that the rules and regulations need to framed in such a manner that the common people could come forward to encourage tree planting for which he gave a slogan 'Plant Tree, Grow Tree, and Use Tree' which has been brought into practice in species like bamboo. Javadekar stated that by ensuring the availability of adequate food and water in the forests, the problem of man-animal conflict can effectively be tackled.

He called upon the awardees to respect the values while working with most modern technologies and systems.

Speaking as the special guest of the ceremony, Siddhanta Das stated that the country is witnessing a paradigm shift in priorities of scientific forest management.

Contrary to the earlier priorities like timber and non wood forest products, now conservation of forests and wildlife, livelihood generation, and water conservation have become the top agenda of the contemporary management strategies.

In his address, Dr. S.C. Gairola, Chancellor of the university talked about some of the important initiatives of the ICFRE like preparation of second National Forestry Research Plan (NFRP) for the country, Forestry Extension Strategy Action Plan, HRD Plan for capacity building of ICFRE employee, implementation of green skill development programme of the ministry, preparation of DPR for rejuvenation of 13 major rivers through forestry interventions, national REDD+ strategy 2018, in line with the national priorities.

The convocation was declared closed by the Chancellor of FRI Deemed to be University and the programme ended with the vote of thanks proposed by Dr. H.S. Ginwal, Dean, FRI Deemed to be University.

INDIAN EXPRESS
8 September, 2019

'Moving ahead towards a transparent life'

LALMANI VERMA
DEHRADUN, SEPTEMBER 7

UNION MINISTER of Environment, Forest and Climate Change Prakash Javadekar on Saturday said that his ministry's job is conservation of *panchtatva* (Earth, Water, Agni or fire, Vayu or Air, and Akash or sky), and that the Centre will work with the slogan of plantation and growing of trees and sustainable use of produce.

Speaking as chief guest at the convocation ceremony of Forest Research Institute in Dehradun,

Prakash Javadekar at the convocation. *Virender Singh Negi*

Javadekar said, "What had not happened in 1,000 years has happened in the past 100 years. Progress of science and changes in life. And what had not happened in the past 100 years has happened in the past 10 years and this is continuing." He continued, "I am saying this is an exciting time because transparency in the system is coming during Modiji's stint as Prime Minister. We are moving ahead in the direction of a transparent life. Because of this, the image of the forest department that was not very good is also changing."

The minister said that foresters have been given smartphones with an application that records whether each of them has walked at least 10 km every day. "New accountability is being set," he said.

India has 24 per cent tree cover and 15,000 sq km tree cover has increased in the past five years, he said, adding that 77 per cent of the world's tigers are in India, the country has 30,000 elephants and 2,000 rhinoceros.

Speaking about the Centre's policies, Javadekar stressed that rules and regulations need to be framed so that people encourage tree planting. He said that by ensuring adequate food and water in the forests, the problem of man-animal conflict can be tackled.

THE PIONEER
8 September, 2019

Country sees increase of 15,000 sq km tree cover: Javadekar

Minister takes part in convocation at FRI, gives slogan 'Plant Tree, Grow Tree, and Use Tree'

PNS ■ DEHRADUN

The Union Minister of Environment, forests and climate change Prakash Javadekar said that due to the efforts made during the last five years, the country has witnessed an increase of 15,000 sq km tree cover.

He was addressing a convocation ceremony at Forest Research Institute (FRI), Deemed to be University, here on Saturday.

He said that the approaches like social forestry and agroforestry and awareness generation among school students through raising nursery on the school premises are responsible for increase in the tree cover in the country.

Javadekar opined that the rules and regulations need to framed in such a manner that the common people could come forward to encourage tree planting.

Giving a slogan 'Plant Tree, Grow Tree, and Use Tree', the Minister said that by ensuring the availability of adequate food and water in the forests, the problem of man-animal conflict can effectively be tackled.

He said that as cutting of trees is banned in India, the country has to import wood worth ₹40,000 crore every year.

Addressing the gathering, the Director General of Forests (DGF) and Special Secretary, Siddhanta Das said the country is witnessing a paradigm shift in priorities of scientific forest management.

He said that contrary to the earlier priorities like timber and non wood forest products, now conservation of forests and wildlife, livelihood generation, and water conservation have become the top agenda of the contemporary management strategies.

Das said that by successfully implementing the 'Pradhanmantri Jal Swavalamban Yojana' in Rajasthan, a significant rise of 4.2 feet of water table in just four years has occurred.

He added that water conservation is imperative in attaining the target of 2.5-3.0 billion ton of carbon sequestration.

In his address, the chancellor of the university and Director General of ICFRE, Dr S C Gairola, talked about some of the important initiatives of the ICFRE like preparation of second National Forestry Research Plan (NFRP) for the country and preparation of DPR for rejuvenation of 13 major rivers through forestry interventions.

He said ICFRE have taken important steps in re-vitalisation of forestry education in India.

THE CONVOCATION

The ceremony started with a majestic academic procession. A total of 315 degrees including 62 PhD and 253 Master of Science (MSc) were conferred in different disciplines and programmes of forestry.

In the convocation gold medals were awarded to the Nidhi, Oindrila Basu, Shabnam Bandyopadhyay (Forestry), Ajin Sekhar, Mitinam Jamoh (Environment Management), Priya Bisht, Subrata Pal (Wood Science and Technology), Vijya Kumar, Gursimaran Kaur Bagga (Cellulose and Paper technology).

TIMES OF INDIA

8 September, 2019

Will give aid for FRI renovation, says Javadekar

Sukanta Mukherjee

Prakash Javadekar also urged people to plant more trees

Shivani.Azad@timesgroup.com

Dehradun: Union minister Prakash Javadekar on Saturday gave his nod for the renovation and restoration of a new Forest Research Institute (FRI) building and assured financial help for the same. The minister made the announcement while addressing the fifth convocation of the Forest Research Institute, which is a deemed to be university.

The minister, however, maintained that the aesthetic value of the building shouldn't be fiddled with. "The natural beauty of the building shouldn't be changed and any patchwork shouldn't be visible. This building is over 100-year-old and it requires some strengthening but its aesthetics should be retained." Experts have estimated a preliminary expenditure of Rs 10 crore for the project.

Earlier, a panel of scientists from CBRI and expert engineers from CPWD had submitted their report, raising concerns regarding the threat to the FRI building from natural calamities, before the ministry.

Javadekar also remembered the 18th century Bishnoi movement in Rajasthan on the occasion. "As we pay obeisance to those who made supreme sacrifice for saving our forests, FRI must remember the Bishnois, who sacrificed their lives in 1730 AD while trying to protect Khejri trees (Prosopis cineraria) then," said the Union minister.

The minister urged people to plant more trees adding that the government intends to promote agro-forestry in the country. "Plant Tree, Grow Tree, and Use Tree — is our new agenda," Javadekar added. He also promised to launch the School Nursery scheme in schools to help students develop a bond with nature saying that the drive will help the nation reduce its carbon footprint.

A total of 315 degrees in different disciplines and programmes of forestry (62 PhD. and 253 MSc degrees) were conferred to students in the ceremony. DG (forests) Siddhanta Das also attended the event as the special guest.